IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विरोधवरूथिनीकार वेल्लाल उमामहेश्वर का वेदान्त दर्शन को योगदान

Dr. Swati Sharma

Dayalbagh Educational Institute, Agra

उमामहेश्वर एवं विरोधवरूथिनी : सामान्य परिचय

वेदान्त दर्शन के प्रमुख वादों में खण्डन–मण्डन परक ग्रन्थों की लम्बो परम्परा प्राप्त होती है। विशिष्टाद्वैत और द्वैत मतानुयायियों ने शांकर अद्वैतवाद का विरोध किया है। वहीं अद्वैत वेदान्ती आचार्यों ने भी द्वैत और विशिष्टाद्वैत मतों का विरोध किया है। फलतः शताब्दियों तक वादानुवादपरक प्रकरण ग्रन्थों के माध्यम से विरोध प्रकट होता रहा ह। **'मुधसूदन सरस्वती'** ने **'अद्वैतसिद्धिः'** में द्वैतमत के आचार्य **'व्यासतीर्थ'** की रचना **'न्यायामृत'** की आलोचना तथा खण्डन किया है तथा द्वैतमतवादी **'रामाचार्य'** ने **'न्यायामृत–तरंगिणी'**में **'अद्वैतसिद्धिः'** की कटु आलोचना तथा खण्डन किया है। **'ब्रह्मानन्द'** की **'चन्द्रिका'** जो **'गौडब्रह्मानन्द'** के नाम से भी जानी जाती है, में **'तरंगिणी'** को अप्रामाणिक सिद्ध किया गया है, वहीं द्वैतमत के प्रवतक **'वनमाली मिश्र'** द्वारा **'चन्द्रिका'** कमत का खण्डन किया गया है। **'वनमाली मिश्र'** कमत का खण्डन **'त्र्यम्बक भट्ट'** ने **'सिद्धान्त–वैजयन्ति'** में किया है। विशिष्टाद्वैत मत के अनुयायी **'अनन्तालवार'** ने **'न्याय–भास्कर'** में **'चन्द्रिका'** की आलोचना की है तथा **'एम.एम. राजुशास्त्री'** ने **'अनन्तालवार'** के खण्डन के लिए **'न्यायेन्दुशेखर'** की रचना की है। विशिष्टाद्वैती आचार्य **'वेदान्तदेशिक'** ने **'शतदूशणी'** में शांकर मत अद्वैतवेदान्त का खण्डन किया है।

यह क्रम यहीं समाप्त नही होता। **'अप्पय दीक्षित'** के समकालीन **'वेल्लाल उमामहेश्वर'** ने **'विरोधवरूथिनी'** में रामानुज के विशिष्टाद्वैत मत का खण्डन किया है तथा शंकराचार्य के मत की स्थापना की है। यह अद्वैत वेदान्त से सम्बन्धित वादानुवादक या शास्त्रार्थ सम्बन्धी रचना है। रचनाकार का उद्देश्य अद्वैत मतावलम्बियों को **'प्रच्छन्न बौद्ध'** कहने

वाले प्रतिपक्षीविशिष्टाद्वैत मतावलिम्बियों को **'प्रच्छन्न जैन'** सिद्ध करना है। यह संक्षिप्त रचना तर्क–वितर्क, प्रस्तुतीकरण एवं आलोचनात्मक दृष्टि से प्रभावपूर्ण है।

आचार्य उमामहेश्वर ने विराधवरूथिनी में रामानुजाचार्य कृत **'श्रीभाष्य'** में शताधिकपरस्पर–विरुद्ध उक्तियों को प्रदर्शित कर रामानुज मत में 27 विरोधों को प्रदर्शित किया है। इन विरोधों के माध्यम से उन्होनें रामनुजीय विशिष्टाद्वैत मत का अत्यन्त तार्किक तथा शास्त्रपरक खण्डन किया है औरआचार्य शंकर क अद्वैत मत की प्रतिष्ठा की है।

वेल्लाल उमामहेश्वर एवं उनका साहित्यिक परिचय

अद्वैत वेदान्त की खण्डन–मण्डन परक शास्त्रीय कृतियो के रचनाकारों में विरोधवरूथिनी के कर्ता आचार्य वेल्लाल उमामहेश्वर का महत्वपूर्ण स्थान है। आचार्य उमामहेश्वर ने अद्वैत–विराधी मतों को खण्डित करत हुए अद्वैत वेदान्त को पुष्ट किया है। आचार्य वेल्लाल उमामहेश्वर के जीवन–काल, जन्म–मृत्यु, मूल–निवास–स्थान तथा व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट विवरण प्राप्त नहीं होता है। विद्वानो ने रचनाओं से प्राप्त अन्तः–बाह्य साक्ष्यों तथा हस्तलिपी की सूचियों में प्राप्त विवरण की सहायता से ही उनके जीवन के विषय में कुछ सामान्य तथ्यों की खोज की है।

आचार्य उमामहेश्वर **वेल्लाल वंशीय** हैं।[1]कुछ विद्वानों के अनुसार उमामहेश्वर का ही उपनाम **'अभिनव कालिदास'** है।

जीवनकाल

तcस्वामी (Tangswami) की अद्वैत वेदान्त की हस्त–लिपि ग्रन्थ–सूची के अनुसार वेल्लाल उमामहेश्वर का जीवन काल 1550-1650 ई. के मध्य है। टी.आर. चिन्तामणि ने 'साहित्य रत्नाकर' में आचार्य उमामहेश्वर के पुत्र का परिचय दिया है कि **'भाष्कर दीक्षित',**'उमामहेश्वर' के पुत्र हैं, इन्होंने **'तप्तमुद्रावन'** की रचना की है। आचार्य भाष्कर नरसिंह्म स्वामी तथा कृष्णानन्द सरस्वती के शिष्य हैं। टी.आर. चिन्तामणि ने भाष्कार को रघुनाथ–नायक का समकालीन बताया है तथा इनका काल 17वीं शताब्दी माना है। श्री राममूर्ति ने –"Contribution of Andhras to Sanskrit Literature"में उमामहेश्वर का उपनाम कालिदास बताया है तथा उनका काल 1465ई. माना है।[2]

R.K. Pandaद्वारा सम्पादित अद्वैत वेदान्त की प्रतिष्ठित पुस्तक **A Survey of Post Adavit Vedant**में आचार्य उमामहेश्वर का परिचय देते हुये कहा गया है–

"He is south Indian Ballakula or Vellal. In his Tattvachandrika, he mention his Guru as Appaye who is his father too, and also appears to have read under Narsimha srama. His son Baskar Diksita wrote

Taptamudravidravana. According to Adhyar library, The name of his Guru seems to be Akhya Sastri of 16th Centuery.[3]

निवास–स्थान

वेल्लाल वंशीय उमामहेश्वर का मूल–निवास–स्थान आंन्ध्र प्रदेश के रॉयल सीमा नामक जिले में **'मोक्षकुन्दम्'** नामक ग्राम था।पॉटर ने 'Bibliography of Indian Philosophy' में उमामहेश्वर का काल 18वीं शताब्दी तथा उमामहेश्वर को तमिलनाडु के कॉल प्रदेश का निवासी कहा है। परन्तु पॉटर के ये आँकड़े विरोधवरूथिनी के सम्पादक वी. वेकण्टरमन रेड्डी के अनुसार प्रामाणिक प्रतीत नहीं होते हैं।[4]

गुरू

श्रीराममूर्ति के अनुसार वेल्लाल उमामहेश्वर के गुरु का नाम **अकय्या शास्त्री** है, जो अकय्या सूरी के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये भागवत–चम्पू तथा साहित्य–कौमुदी के रचनाकार हैं।

रचनाए

Government Oriental Manuscript Library, Madras में संस्कृत हस्तलिपी सूची में वेल्लाल उमामहेश्वर की निम्नलिखित रचनाओं का विवरण प्राप्त होता है–

(i)तत्त्वचन्द्रिका (ii)अद्वैतकामधेनु (iii)वेदान्तसिद्धान्तसार (iv)विरोधवरूथिनी।

(i) तत्त्वचन्द्रिका

उमामहेश्वर विरचित 'तत्त्वचन्द्रिका' अद्वैत वेदान्त की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति है। इसे 'निर्गुण–ब्रह्म–मीमांसा' के नाम से भी जाना जाता है। इसमें 12 उल्लास हैं। यह अप्रकाशित कृति है तथा G.O.M.Lमद्रास में हस्तलिखित ग्रन्थ के रूप में संरक्षित है। यह कृति रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य तथा श्रीकाण्ठ आदि आचार्यों के मतो का आलोचनात्मक खण्डन करती है तथा शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त को सुस्थापित करती है। विरोधवरूधिनी में आचार्य वेल्लाल उमामहेश्वर ने 'तत्त्वचन्द्रिका' के विषय में कहा है–

मध्वरामनुजौ जातौ वेदान्तव्याकृति क्षमौ।
यत्प्रसादात् कलेस्तस्य वैभव्यं केन वणर्यते।।[5]
सप्तविंशतिरेवात्र विरोधाः प्रकटीकृताः।
अवशिश्टाः विभाव्यन्तां चन्द्रिकाख्यां निबन्धने।।[6]

(ii) अद्वैतकामधेनु

यह रचना सूत्र शैली में है। यह दो परिशिष्टों में विभाजित है। यह तेलगू भाषा में लिखी गयी है। यह रचना अद्यावधि प्राप्त नहीं है।

(iii) वेदान्तसिद्धान्तसार

आचार्य वेल्लाल की यह रचना भी अद्यावधि प्राप्त नहीं है और इसके विषय में कोई विवरण भी प्राप्त नहीं होता है।

विरोधवरूथिनी का सामान्य परिचय

विरोधवरूथिनी अद्वैत वेदान्त से सम्बन्धित वादानुवादक तथा शास्त्रपरक रचना है। यह ग्रन्थ तर्क–वितर्क, प्रस्तुतीकरण एवं आलोचनात्मक दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण है। विरोधवरूथिनी का प्रारम्भ करते हुए आचार्य वेल्लाल ने स्वयं उद्घोष किया हैं कि–

परभाष्यबलं भेत्तुं विरोधानां वरूथिनीम्।
उमामहेश्वराख्योऽहं कुर्वे वेल्लालवंशजः।।[7]
अतश्शतं विरोधानां भाष्ये रामानुजेरिते।
दुरूद्धरं हरेणापि हरिणापि निरूप्यते।।[8]

विरोधवरूथिनी अपने नाम के द्वारा ही अपना मन्तव्य तथा सामान्य परिचय प्रस्तुत कर देती है। विरोधवरूथिनी का सामान्य अर्थ है–**'विरोधों की सेना'**। आचार्य वेल्लाल उमामहेश्वर ने विरोधवरूथिनी के 27 विरोधों में रामानुजाचार्य के शताधिक अन्तर्विरोधी कथनों को प्रस्तुत करते हुए विरोधों की ऐसी सेना खड़ी की है जो विशिष्टाद्वैत मत में अनेक दोषों को निरूपित करते हुए उसका समूल खण्डन करती है तथा शांकर मत अद्वैत को मण्डित कर प्रतिष्ठित करती है। आचार्य उमामहेश्वर ने प्रसंगतः 49 ब्रह्मसूत्रों तथा अन्य श्रुति वाक्यों को उद्धृत किया है, जिनके भाष्य में आचार्य रामानुज ने परस्पर विरुद्ध सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया है। आचार्य रामानुज ने ब्रह्मसूत्रों के भाष्य में एक सूत्र में जिस सिद्धान्त को प्रतिपादित किया है, पुनः उसी सूत्र के भाष्य में अथवा अन्य सूत्रों के भाष्य में अपने ही सिद्धान्त के विपरीत मत को प्रस्तुत किया है। अतः आचार्य वेल्लाल ने रामानुज मत को स्वोक्ति दोष से युक्त सिद्ध किया है।

आचार्य रामानुज ने श्रीभाष्य में तथा अन्य रचनाओं वेदान्तसंग्रह, वेदान्तसार, शतदूषणी आदि में अद्वैत मत का खण्डन किया है तथा शंकराचार्य के सिद्धान्तों में अनुपपत्तियों का उद्घाटन किया है। विशिष्टाद्वैत सम्प्रदाय अनुगामी आचार्य **वेदान्तदेशिक** कृत **'शतदूषणी'** में अद्वैत मत के दोषों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें आचार्य वेदान्तदेशिक ने

'ब्रह्म–सूत्र'शांकरभाष्य, 'भामती' एवं **'इष्टसिद्धिः'** को मूल आधार बना कर **शंकराचार्य, 'वाचस्पति मिश्र'** एवं **'विमुक्तात्मन'** के सिद्धान्तों को असंगत सिद्ध किया है तथा अद्वैत मत में शत दोषों को निरूपित करते हुए आचार्य शंकर को 'प्रच्छन्न बौद्ध' कहा है।[9]

आचार्य वेल्लाल उमामहेश्वर ने इसी के प्रत्युत्तर में रामानुजीय भाष्य में शताधिक अन्तर्विरोधों को प्रदर्शित कर **रामानुजाचार्य, 'श्रुतिप्रकाशिकार सुदर्शनसूरि'**एवं**'वेदान्तदेशिक'** के सिद्धान्तों को असंगत सिद्ध किया है तथा विशिष्टाद्वैत मत में अनेक दोषों का निरूपण करते हुए आचार्य रामानुजाचार्य को नास्तिक दर्शन **'लोकायत', बौद्ध** तथा **जैन** का अनुगामी व **'प्रच्छन्न जैन'** सिद्ध किया है। कुछ स्थानों पर विरोधवरूथिनी अपनो रचना शैली से श्री हर्ष द्वारा विरचित अद्वैत परम्परा के ग्रन्थ **'खण्डनखण्डखाद्य'** का स्मरण कराती है। आचार्य उमामहेश्वर ने प्रतिपक्ष के खण्डन के लिए विशिष्ट तथा अत्यन्त तार्किक शैली का प्रयोग किया है। आचार्य ने प्रतिपक्ष के किसी भी सिद्धान्त के खण्डन के लिए सर्वप्रथम उसके मूल प्रेरक सिद्धान्त का खण्डित किया है जिससे प्रतिपक्ष कमत का स्वतः ही निराकरण हो जाता है।

रामानुजाचार्य ने जिन तत्त्वों ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा, संसार और मुक्ति के विषय में शंकराचार्य का विरोध किया है, उन्हीं तत्त्वों को आधार बनाकर विरोधवरूथिनी में आचार्य वेल्लाल उमामहेश्वर ने रामानुज प्रतिपादि सिद्धान्तों में अन्तर्विरोध को प्रस्तुत किया है।

विरोधवरूथिनी का **प्रथम, त्रयोदश, चतुर्दश, पɢचदश, शोडश, सप्तदश** तथा **एकोनविंश विरोध 'ब्रह्मकारणवाद'** के विषय में है। इसमें आचार्य उमामहेश्वर ने रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित **'विशिष्ट–ब्रह्म–परिणामवाद'** का निराकरण किया है। विरोधवरूथिनी के **दशम** तथा **द्वादश** विरोध में **'ब्रह्म के सगुण स्वरूप'** का अनेक युक्तियों से खण्डन किया गया है तथा आचाार्य वेल्लाल ने रामानुजाचार्य के अन्तविर्रोधी कथनों को प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा प्रतिपादित ब्रह्म (ईश्वर) को भौतिक तथा अनित्य सिद्ध किया है। **द्वितीय** तथा **तृतीय विरोध 'जीव क स्वरूप'** के विषय मे हैं। इसमें आचार्य वेल्लाल ने **'ज्ञानसंकोच–विकासवाद'** का खण्डन किया है तथा रामानुज प्रतिपादित 'जीव के स्वरूप' को जैनमत 'अनेकान्तवाद' तथा 'स्याद्वाद' पर आधारित सिद्ध करते हुए उन्हें **'प्रच्छन्न जैन'** कहा है। **पɢचम विरोध** में रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित जीवात्मा के स्वाभाविक **भोक्तृत्व** तथा **कर्तृत्व** का खण्डन किया गया है। **शष्ठ** तथा **सप्तम विरोध** जीव–परिमाण **अणुत्व** तथा **विभुत्व** के विषय में है। विरोधवरूथिनी के **अष्ठम, नवम, विंश** तथा **शड्विंश** विरोधों में आचार्य वेल्लाल ने रामानुज द्वारा प्रतिपादन **मुक्ति, मुक्त जीव** तथा **वैकुण्ठ** के स्वरूप का अत्यन्त तार्किक खण्डन किया है। **त्रयोविंश चतुर्विंश, पंचविंश** तथा **सप्तविंश** विरोध**'जीव तथा ब्रह्म के सम्बन्ध'** के विषय में है। इनमें **शरीर–शरीरी–भाव सम्बन्ध, विषय–विषयी भाव सम्बन्ध** तथा **भेदाभेदवाद**

आदि को अनुपपन्न सिद्ध किया गया है। विरोधवरूथिनी का **चतुर्थ, एकादश, अश्टादश** तथा **एकविंश** तथा **द्वाविंश** विरोध **'जगत् के स्वरूप'** के विषय में हैं। इसमें विशिष्टाद्वैतमत के सिद्धान्त **'जगत् यथार्थवाद'** तथा **स्वप्न–यथार्थवाद'** का खण्डन किया गया है तथा आचार्य वेल्लाल ने शंकराचार्य पर **'प्रच्छन्न बौद्ध'** होने का आरोप लगाने वाले विशिष्टाद्वैतमतावलम्बियों को **'प्रत्यक्ष बौद्ध'** सिद्ध किया है। आचार्य वेल्लाल उमामहेश्वर ने इन 27 विरोधों के माध्यम से रामानुज के कथनों में शताधिक अन्तर्विरोधों को सप्रमाण उद्धृत किया है तथा वेदान्त–दर्शन के खण्डन–मण्डन परम्परा के रण मे विशिष्टाद्वैत–मत को विरोधों की सेना से पराजित करके अद्वैत वेदान्त का साम्राज्य स्थापित किया है। विशिष्टाद्वैत मत को परास्त करके आचार्य वेल्लाल अद्वैत मत का जय–घोष करते हुए कहते है –

विरोधानां वरूथिन्या परभाश्यबलं हतम्।
निश्शंकातंकमद्वैतसाम्राज्यमनुभूयताम्।।[10]

सन्दर्भ

1. उमामहश्वराख्योऽहं कुर्वे वेल्लालवंराजः–वि.व.–पृ.सं.–1
2. विराधवरूथिनी पृ.सं.–XVII
3. A Survey of Post Advait Vedant, P.No.-303
4. विरोधवरूथिनी, पृ.सं.–XVII
5. विरोधवरूथिनी, पृ.सं.–15
6. उपरिवत्, पृ.सं.–85
7. विराधवरूथिनी, पृ.सं.–1
8. उपरिवत्, पृ.सं.–1
9. Advait and Visitadvait (A study based on satdusani)–पृ.सं.–9
10. विरोधवरूथिनी, पृ.सं.–85